पंजाब केसरी

4 APRIL 2021

सामाजिक रिश्तों और संवाद की मानसिकता को समझने में मदद करता है मनोविज्ञान

लखनऊ, (पंजाब केसरी): प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ. संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, "मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है।" अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है।

डॉ. साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

लखनऊ में प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित प्रबुद्धजन। (छाया : पंजाब केसरी)

Hindustan Times

5 APRIL 2021

Educators, psychologists meet at JIBS

LUCKNOW : Dr Sanjeev P Sahni, principal director of the Jindal Institute of Behavioural Sciences (JIBS), presided over a meeting with prominent educators and psychologists at Jindal Global University in Lucknow. Speaking on the occasion, Dr Sahni emphasised how psychology can help in understanding the relationship between the individual and the society by understanding the mindset behind social relationships and interactions.

Advances in psychology and allied sciences have led to the development of better tools.

दैनिक जागरण

4 APRIL 2021

मनोविज्ञान न केवल इलाज, बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

लखनऊ : प्रमुख शिक्षाविदों और मनोविज्ञानियों के बीच हुई संगोष्ठी में कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल इलाज है, बल्कि संभावनाओं का विज्ञान है। एक होटल में संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआइबीएस) के प्रमुख निदेशक डा. संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है। (जासं)

एजुकेशन

जिंदल स्कूल ऑफ बिहेवियरल साइंसेज़ ने आयोजित की लखनऊ में मनोवैज्ञानिकों की बैठक

By **Global today** - April 5, 2021

सोमवार , 5 अप्रैल को जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (JIBS) के प्रधान निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने लखनऊ में जाने माने शिक्षकों और मनोवैज्ञानिकों के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर डॉ साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान कैसे किसी एक व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझने में मदद कर सकता है।

सेमिनार को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि हमारे जीवन में किस प्रकार मनोविज्ञान विभिन्न रूपों में गुँथा हुआ है। "यह एक ऐसा विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय अंतःक्रिया का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। डॉ साहनी ने आगे कहा कि इस क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तिगत ,युगल , परिवार और समुदाय से लेकर अस्पताल, स्कूल, मानसिक स्वास्थ्य संगठन, व्यवसाय और गैर-लाभकारी संगठन जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है "। उन्होंने कहा, " मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचार का विज्ञान समझने की बजाय इसे ज्ञान के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए जो शिक्षा, व्यवसाय और आपराधिक व्यवस्था और क़ानून के क्षेत्रों में व्यावहारिक मनोविज्ञान का इस्तेमाल कर हमारे जीवन को बेहतर बनाने में मदद करता है।"

Psychology needs to be seen not only as a science of 'cure' but 'possibility'

Our Correspondent

Lucknow : Dr. Sanjeev P. Sahni, Principal Director of the Jindal Institute of Behavioural Sciences (JIBS), at the Jindal Global University presided over a meeting with prominent educators and psychologists at Lucknow.

Speaking on the occasion, Dr. Sahni emphasized how Psychology can help in understanding the relationship between the individual and the society- with the individual being the domain of psychology and the society that of sociology and other sciences- by understanding the mindset behind social relationships and interactions. Advances in psychology and allied sciences have led to the development of better tools, methods and interventions to measure different human behaviors- from cognitive impairments to emotional disorders.

Addressing the seminar, Dr. Sahni highlighted how Psychology is engraved into our lives in diverse ways. "It is a science which can help in observing the personal, social and environmental interactions between us and the outside world. The diversity of the field can be gauged from the fact that it studies everyone from individuals, couples, families and communities to institutions like hospitals, schools, mental health organizations, businesses, and non-profit organizations," Dr. Sahni said.

"Rather than thinking of Psychology merely as a science of cognitive treatments, it should be seen as an area of academics that improves our daily lives through Applied Psychology interventions in education, businesses

criminal systems and law," he added. In a bid to achieve the goal, Dr. Sahni informed about the establishment of Jindal School of Psychology and Counselling (JSPC)- a research-led, future-oriented School of O.P Jindal Global University that aims to focus on developing a new generation of thought leaders in the fields of Psychology and Counselling.

Dr. Sahni also urged the budding Psychologists and Counselors to learn about newer research techniques, practices and tools to keep pace with the changing approaches in the field. He offered Psychology scholars to use Jindal Institute of Behaviourial Sciences' Brain Behaviour Laboratory (BBL) for research in developmental and cognitive psychology, affective neurosciences and psychopathology.

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोश्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है।

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञानः डॉ संजीव

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है।

डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय अदालतिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है।

सामाजिक रिश्तों और संवाद की मानसिकता को समझने में मदद करता है मनोविज्ञान

(आज समाचार सेवा)

लखनऊ, शनिवार। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ. साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों

और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफबिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

एनडीएस संवाददाता

▶▶ सामाजिक रिश्तों और संवाद की मानसिकता को ▶▶ समझने में मदद करता है मनोविज्ञान-डा0 संजीव

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोश्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है।

उन्होंने कहा, मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

सामाजिक रिश्तों व संवाद की मानसिकता को समझने में मदद करता है मनोविज्ञान : डा. संजीव

लखनऊ (हमारा मैट्रो संवाददाता)। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोश्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का

नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

कैनविज टाइम्स

4 APRIL 2021

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोश्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, ह्लमनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है।ह्ल अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

राष्ट्रीय स्वरूप

4 APRIL 2021

सामाजिक रिश्तों व संवाद की मानसिकता को समझने में मदद करता है मनोविज्ञान : डा. संजीव

स्वरूप संवाददाता

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुई संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल इलाज है बल्कि संभावनाओं का विज्ञान है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है।

क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा कि मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजी के हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावनात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

रीडर्स मैसेंजर

4 APRIL 2021

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

सामाजिक रिश्तों और संवाद की मानसिकता को समझने में मदद करता है मनोविज्ञान : डा0 संजीव

लखनऊ(रीडर्स मैसेंजर नेटवर्क)। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोश्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, ÷मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे

शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है।÷ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

सामाजिक रिश्तों और संवाद की मानसिकता को समझने में मदद करता है मनोविज्ञान : डा. संजीव

संवाददाता

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल ह्लइलाजह्ल है बल्कि ह्लसंभावनाओंह्ल का विज्ञान है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, ह्लमनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है।ह्ल अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

स्वतंत्र भारत

4 APRIL 2021

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का है विज्ञान

स्वतंत्र भारत,संवाददाता लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और

सामाजिक रिश्तों और संवाद की मानसिकता को

समझने में मदद करता है मनोविज्ञान : डा. संजीव

उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा,मनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
तिजारत

4 APRIL 2021

मनोविज्ञान न केवल इलाज बल्कि संभावनाओं का विज्ञान

तिजारत संवाददाता

लखनऊ। प्रमुख शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के बीच हुयी संगोष्ठी में मनोवैज्ञानिकों को क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा गया कि मनोविज्ञान न केवल 'इलाज' है बल्कि 'संभावनाओं' का विज्ञान है। संगोश्ठी की अध्यक्षता करते हुये मुख्य अतिथि जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज (जेआईबीएस) के प्रमुख निदेशक डॉ संजीव पी साहनी ने इस बात पर जोर दिया कि मनोविज्ञान की मदद से सामाजिक रिश्तों और संवाद के पीछे की मानसिकता को समझा जा सकता है और व्यक्ति को मनोविज्ञान और समाजशास्त्र और अन्य विज्ञानों के दायरे में रखते हुए व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। मनोविज्ञान और संबद्ध विज्ञानों में हुई प्रगतियों ने बौद्धिक और मानसिक नुकसान के कारण होने वाले भावनात्मक विकारों से लेकर विभिन्न मानव व्यवहारों को मापने के लिए बेहतर साधनों, विधियों और तकनीकों के विकास का नेतृत्व किया है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, डॉ साहनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे मनोविज्ञान का विविध तरीकों से हमारे जीवन में गहरा प्रभाव है। डॉ साहनी ने कहा यह एक विज्ञान है जो हमारे और बाहर की दुनिया के बीच व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय संबंध का अवलोकन करने में मदद कर सकता है। क्षेत्र की विविधता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह व्यक्तियों, दम्पतियों, परिवारों और समुदायों से लेकर अस्पतालों, स्कूलों, मानसिक स्वास्थ्य संगठनों, व्यवसायों और गैर-लाभकारी संगठनों संस्थानों जैसे सभी संस्थानों का अध्ययन करता है। उन्होंने कहा, ह्लमनोविज्ञान को केवल संज्ञानात्मक उपचारों के विज्ञान के रूप में सोचने के बजाय, इसे शिक्षाविदों के एक क्षेत्र के रूप में देखा जाना चाहिए, जो शिक्षा, व्यवसाय आपराधिक प्रणालियों और कानून में एप्लाइड साइकोलॉजीके हस्तक्षेप के माध्यम से हमारे दैनिक जीवन को बेहतर बनाता है।ह्ल अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, डॉ साहनी ने ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के शोध-नेतृत्व वाला, भविष्य-उन्मुख स्कूल जिंदल स्कूल ऑफ साइकोलॉजी एंड काउंसलिंग (जेएसपीसी) की स्थापना के बारे में बताया, जिसका लक्ष्य मनोविज्ञान और काउंसलिंग के क्षेत्र में थाउट लीडर्स की नई पीढ़ी के विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। डॉ साहनी ने नवोदित मनोवैज्ञानिकों और परामर्शदाताओं से इस क्षेत्र में बदलते दृष्टिकोणों के साथ तालमेल रखने के लिए नई अनुसंधान तकनीकों, प्रथाओं और उपकरणों के बारे में जानने का भी आग्रह किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक ज्ञाताओं को विकासात्मक और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, भावात्मक तंत्रिका विज्ञान और मनोविकृति विज्ञान में अनुसंधान के लिए जिंदल इंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियरल साइंसेज के ब्रेन बिहेवियर लेबोरेटरी (बीबीएल) का उपयोग करने की पेशकश की।